अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

पचास वर्ष पश्चात् जीवंत हो उठा स्वर्णिम इतिहास

-इतिहास की हुई पुनरावृत्ति, ठीक पचास वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी का कौड़ियार पैलेस में हुआ था प्रवेश

-आह्लादित राजपरिवार ने आचार्यश्री के किए दर्शन, राजामाता व प्रिन्स आदि ने की घंटों उपासना

-त्रिवेन्द्रम वुमेन क्लब से आचार्यश्री ने बहुश्रुत की पर्युपासना का दिया मंगल मंत्र

18.03.2019 कौड़ियार, तिरुवनंतपुरम (केरल): सोमवार को केरल की धरती पर इतिहास का दोहराया जा रहा था उसका वर्तमान प्रत्यक्ष गवाह बन रहा था। आज से ठीक पचास वर्ष पूर्व 1969 में तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी अपनी केरल की यात्रा के दौरान जिस त्रावणकोर राजपरिवार पर कृपा कराते हुए अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों परिवर्तन करते हुए राजपरिवार को अपना आशीष प्रदान करने राजभवन पधारे थे और ठीक आज यानि 18 मार्च 2019 में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने राज परिवार के प्रिन्स श्री आदित्य वर्मा की भावपूर्ण प्रार्थना को स्वीकार करते हुए अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में परिवर्तन कर राज परिवार पर कृपा बरसाने को गतिमान थे।

लगभग छह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री कौड़ियार पैलेस परिसर में पधारे। आचार्यश्री के पैलेस परिसर में पधारने की सूचना जैसे ही प्रिंस श्री आदित्य वर्मा को प्राप्त हुई, वे नंगे पैर आचार्यश्री की अगवानी को चल पड़े। उनकी श्रद्धाभक्ति और आस्था अन्य लोगों को भी प्रेरित कर रही थी। आचार्यश्री के सम्मुख उपस्थित होकर श्रद्धा से वंदन किया और आचार्यश्री का राजभवन में हार्दिक अभिनन्दन किया। आचार्यश्री राजभवन में पधारे। राजमाता गौरी लक्ष्मीबाई ने राजभवन के भीतर आचार्यप्रवर का विधि अनुसार अभिनन्दन किया। राजमाता और प्रिंस एक भक्त की भांति आचार्यश्री के पट्ट के समक्ष नीचे बैठ गए। यह क्षण तेरापंथ की गौरवगाथा को वृद्धिंगत बना रहा था तो वहीं इतिहास की पुनरावृत्ति भी कर रहा था। राजमाता की विभिन्न जिज्ञासाओं को आचार्यश्री समाहित करते जा रहे थे। जैन धर्म, साधुचर्या, तेरापंथ की आचार-व्यवहार की व्यवस्था आदि के विषय में उनसे विस्तृत चर्चा हुई। अनेक पुस्तक लिखने वाली राजमाता ने कुछ संस्कृत के श्लोक आदि सुनाए तो आचार्यश्री ने भी उन्हें भगवान आदिनाथ की भक्ति के श्लोक सुनाए। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने एक गीत का आंशिक संगान किया। लगभग घंटे भर से अधिक चले वार्तालाप के बाद आचार्यश्री ने उन्हें पावन पाथेय और प्रेरणा प्रदान किया। आचार्यश्री की प्रेरणा व सान्निध्य से पूरा राजपरिवार पुलकित, प्रफुल्लित नजर आ रहा था। उनके चेहरे पर उभरते श्रद्धा व भक्ति के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे। आचार्यश्री पैलेस से लगभग एक किलोमीटर का विहार कर त्रिवेन्द्रम वुमेन्स क्लब परिसर में पधारे।

यहां उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को बहुश्रुत की पर्युपासना करने का प्रयास करना चाहिए और साथ ही जिज्ञासा भी करें। जिज्ञासा हो और उसका सामाधान बहुश्रुत साधु के द्वारा प्राप्त हो जाए तो उसका वास्तविक अर्थ भी जानने का प्रयास करना चाहिए। बहुश्रुत की पर्युपासना के तीन लाभ बताए गए हैं- पहला लाभ है वर्तमान जीवन का हित होता। जब ज्ञानी और त्यागी संत से ज्ञान प्राप्त होता है तो उससे आदमी के वर्तमान जीवन का कल्याण हो जाता है। वह ज्ञान प्राप्त कर विभिन्न प्रकारों के पापों व बुरे कार्यों से स्वयं का बचाव कर लेता है। दूसरा लाभ बताया गया कि उसके परलोक का भी हित हो जाता है। जब आदमी का वर्तमान जीवन शांति में, अहिंसा में, मैत्रीपूर्ण से भावित होता है तो उसके इह लोक के साथ-साथ परलोक का भी कल्याण हो जाता है। बहुश्रुत की पर्युपासना से सुगति की प्राप्ति होती है। ज्ञान से आचार अच्छा बनता है तो आदमी की आगे की गति भी अच्छी होती है। इसलिए आदमी को बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए।